फाँसी से छुटकारा

क) पुराने समय में न्याय राजाओं की इच्छा ही प्रशासन में सबसे महत्वपूर्ण होती थी|उस समय न्यायालय तो होते , परन्तु यदि

ख) सुकर्मा नामक राजा राज्य में सुख–शांति बनाए रखने के लिए चाहता था कि उसके राज्य में कोई चोर , लुटेरा , डाकू और शराबी न रहे |इसलिए जब कोई भी ऐसा अपराध करता ,तो उसे कठोर दंड भुगतना पड़ता था|

ग) नंददास नाम का एक सेठ था | जब वह अपने घर में सो रहा था तो उसी वक़्त उसके घर में चोर घुस आए | जब चोर चोरी कर रहे थे ,तो सेठ की नींद खुल गई और वह चोरों पकड़ने के लिए ज़ोर–ज़ोर से चिल्लाने लगा |

घ) सिपाही जंगल में कुछ ही दूर पहुँचे थे कि उन्हें एक स्थान पर चार व्यक्ति बैठे मिले | सिपाही उनके पास जा पहुँचे | वे उस समय उस धन का बँटवारा कर रहे थे , जो उन्होंने सेठ के घर तथा अन्य स्थानों से चुराया था | चोरों ने यात्री – वेश में उन सिपाहियों को देखकर पूछा – "तुम कौन हो और यहाँ क्यों आए हो ?"

एक सिपाही बोला – "हम रास्ता भटक गए हैं | यहाँ रास्ता पूछने आये हैं | भला आप कौन हैं ?"

यह सुनते ही चोर भागने की चेष्टा करने लगे | सिपाही तो पहले से ही तैयार थे | वे खूब हृष्ट – पुष्ट थे | उन्होंने चोरों को पकड़ लिया |

ड) राज ने चोरों से कहा – "तुम सब एक जैसे अपराधी हो ;क्योंकि सभी ने मिलकर चोरी की है | इसलिए तुम सबको फाँसी की सज़ा दी जाती है |

च) चौथे चोर ने यह उपाय सोचा और कहा – "मेरी इच्छा महाराज से मिलने की है |"

जल्लाद ने उस चोर से पूछा – " उनसे मिलकर क्या करोगे ?"

चोर ने उत्तर दिया – "उन्हें एक विद्या सिखानी है | मुझे भय है कि मेरे मर जाने के बाद वह विद्या लुप्त हो जायेगी |"

छ) चोर ने सोना बोने का अधिकार बताते हुए कहा कि महाराज चोर द्वारा बोया हुआ बीज नहीं उगता | जिसने कभी चोरी न की हो , सोना बोने का अधिकार तो उसका ही है | कृपया , आप बोने का

शुभ कर्म कर दें |

ज) राजा, मंत्री , न्यायाधीश आदि सोना बोने के लिए इसलिए तैयार नहीं हुए क्योंकि सबने कभी –न – कभी चोरी की थी |

झ)चोर की युक्तियों को सुनकर राजा दंग रह गया और बोला – "चोर ! तुम बुद्धिमान हो | मैं तुम्हारा अपराध क्षमा करता हूँ | मैं चाहता हूँ कि तुम मेरे पास ही रहो और समय – समय पर मेरी उलझनें सुलझाया करो | "